Q → What do you mean by Elasticity of demand. How it measured?

माँग मूल्य का फलन होता है

Ans :→ "Demand is function of Price" D = f(P)

कीमत में परिवर्तन के साथ-साथ माँग में भी परिवर्तन होता है परन्तु ऐसा बहुत कम होता है कि कीमत में परिवर्तन से माँग में एकरूप या एक समान परिवर्तन हो। कीमत में समान परिवर्तन होने पर भी माँग में कभी बहुत अधिक परिवर्तन होती है और कभी बहुत कम। अतः माँग के नियम द्वारा हम जानते हैं कि माँग में क्यों परिवर्तन हुआ? अर्थात माँग का नियम Why ~~द्वारा ऐसा "How" का अध्ययन करते हैं~~ का अध्ययन करता है, मांग की लोच के द्वारा हम इस how का अध्ययन करते हैं।

इस तरह, माँग के लोच के नियम द्वारा हम इसी बात की जानकारी करते हैं कि मूल्य में कितना परिवर्तन होने से माँग में कितना परिवर्तन होगा। इस तरह, माँग की लोच मूल्य में परिवर्तन के कारण माँग में परिवर्तन की दर को बतलाता है।

माँग की लोच - धारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम Prof. Alfred Marshall ने अपनी पुस्तक "Principles of Economics" में 1890 में किया।

इस आधुनिक युग में माँग की लोच की धारणा इतना महत्वपूर्ण है कि Prof. J.M. Keynes का कहना है कि यदि Marshall महोदय कुछ भी नहीं लिखते सिर्फ माँग की लोच की धारणा का प्रतिपादन करके मर जाते तब अर्थशास्त्र में सदा के लिए अमर हो जाते।

इस तरह, Marshall ने अपनी पुस्तक "Principles of Economics" में माँग की लोच की धारणा को परिभाषित करते हुए कहा है कि "किसी वस्तु के मूल्य में कम वृद्धि से यदि माँग में अधिक कमी हो अथवा मूल्य में कम कमी से माँग में अधिक वृद्धि हो तो उसे लोचदार माँग कहते हैं। उन्हीं के शब्दों में -

"The Elasticity or responsiveness of demand in great ~~Correspond Small according~~

or small according increases much as the amount demanded in price and or little for a given fall in price and diminishes much or little for a given rise in price." इसी प्रकार, Boulding, Benham, Meyers and Mrs. Robinson आदि ने माँग की लोच की धारणा की परिभाषा अपने-अपने शब्दों में की है। इन सभी परिभाषाओं का मूल अर्थ यही है कि माँग की लोच मूल्य में परिवर्तन और माँग में परिवर्तन के अनुपात को बतलाता है अर्थात् एक प्रतिशत मूल्य में परिवर्तन होने से माँग में कितना प्रतिशत परिवर्तन होता है, उसे ही माँग की लोच कहते हैं इस तरह, "Elasticity of demand is rate of change in demand to change in price".

इस तरह, हम कह सकते हैं कि माँग की लोच मूल्य में परिवर्तन से माँग में परिवर्तन की दर को बतलाती है।

$$E_d = \frac{\text{Proportionate Change in Quantity demanded}}{\text{Proportionate Change in Price}}$$

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{मूल्य में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

डिग्री के आधार पर निम्नलिखित पाँच भागों में माँग की लोच के नियम को बाँटकर अध्ययन किया जाता है —

(i) पूर्णतया लोचदार माँग (Perfectly elastic demand)
(ii) सापेक्षिक लोचदार माँग (Relatively elastic demand)
(iii) सम लोचदार माँग (Unit elastic demand)
(iv) सापेक्षिक बेलोचदार माँग (Relatively inelastic demand)
(v) पूर्णतः बेलोचदार माँग (Perfectly inelastic demand)

(i) Perfectly elastic demand :→ जब मूल्य में थोड़ा परिवर्तन होने से माँग में अनन्त परिवर्तन हो तो उसे पूर्णतया लोचदार माँग कहते हैं। ऐसी स्थिति में,

$E_d = \infty$ (infinitive

इसे हम बगल के रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

रेखाचित्र (1) में दिखलाया गया है कि मूल्य में कुछ भी वृद्धि होती है तो माँग घटकर शून्य हो जाता है और मूल्य में कुछ भी कमी होती है तो माँग में अनन्त वृद्धि होती है।

Fig-1

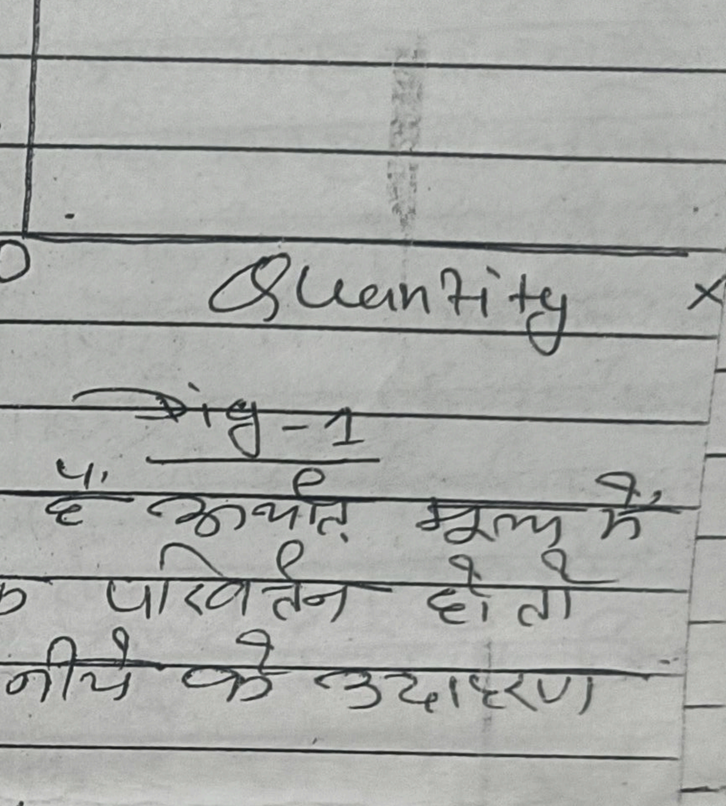

(ii) Relatively elastic Demand :->

जब मूल्य वृद्धि की तुलना में माँग में अधिक कमी अथवा मूल्य में कमी की तुलना में माँग में अधिक वृद्धि हो तो उसे सापेक्षिक लोचदार माँग कहते हैं अर्थात् मूल्य में परिवर्तन की तुलना में माँग में अधिक परिवर्तन हो तो उसे सापेक्षिक माँग कहते हैं। यह नीचे के उदाहरण से स्पष्ट है। E_d = [illegible] <1

कलम का मूल्य		कलम की माँग
5 Rs.	⟷	100
6 Rs.	⟷	50
4 Rs.	⟷	150

इसे हम बगल के रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। रेखाचित्र-2 से स्पष्ट है कि यहाँ PP_1 की तुलना में NN_1 अधिक है अर्थात् मूल्य में परिवर्तन की तुलना में माँग में परिवर्तन अधिक है।

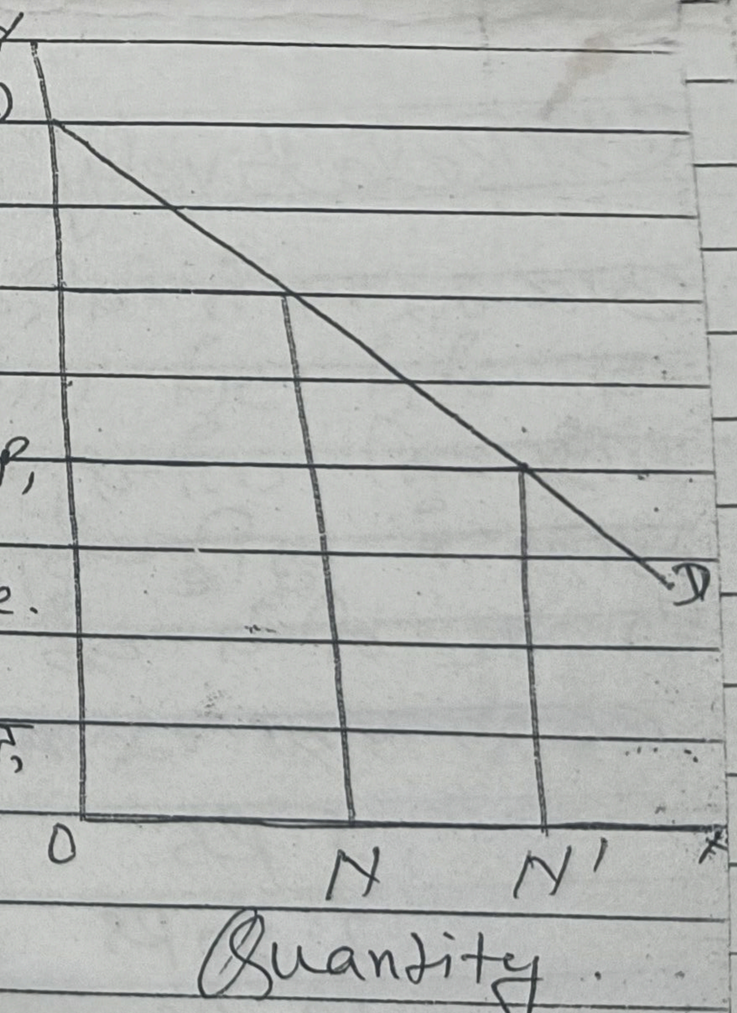

Fig-2

(iii) Unit elastic Demand :->

जब मूल्य में परिवर्तन और माँग में परिवर्तन का अनुपात समान हो तो उसे Unit elastic demand कहते हैं। अर्थात् समलोचदार माँग के अन्तर्गत कीमत में जिस अनुपात में वृद्धि होती है, माँग में उसी अनुपात में कमी और इसका उल्टा भी सत्य है।